रजब महीने की हकीकत

हजरत मुफ्ती तकी उस्मानी दब.

Google Drive   Telegram   Facebook Page

हवाला- इस्लाही खुत्बात हिन्दी/१ से एक टुकडा

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

रजब के महीने के बारे में लोगो के दरमियान तरह तरह की गलत फेहमीया फेल गयी है उनकी हकीकत समझ लेनी चाहिये.

रजब का चांद देखकर आप हुजूरﷺ का अमल

इस पूरे महीने के बारे में जो बात सही सनद के साथ हुजूरﷺ से साबित हे, वो ये हे के जब हुजूरﷺ रजब का चांद देखते थे तो चांद देख कर हुजूरﷺ ये दुआ पढते थे,

“अल्लाहुम्मा बारिक लना फी रजब व शअबान व बल्लीगना रमजान”

तरजुमा: ‘ए अल्लाह हमारे लिये रजब और शअबान के महीने में बरकत अता फरमाये और हमे रमजान तक पोहचा दीज्ये’. यानी हमारी उमर इतनी कर दीज्ये के

हम अपनी जिन्दगी में रमजान को पाले, यानी के पेहले ही से रमजानुल मुबारक के आने का शौक होता था, ये दुआ हुजूर ﷺ से सही सनद के साथ साबित हे, इसलिये ये दुआ करना सुन्नत हे, इसके अलावा और चीजे लोगो में जो मशहूर हो गयी हे उनकी शरीअत में कोई असल और बुनियाद नही हे.

शबे मेराज की फजीलत साबित नही

मिसाल के तौर पर २७वी रजब की रात के बारे में ये मशहूर हो गया के ये मेराज की रात हे, जिस तरह शबे कदर गुजारी जाती हे और जो फजीलत शबे कदर की हे, करीब करीब मेराज की रात की भी वही फजीलत समजी जाती हे बल्के इससे बढकर यहां तक लिखा हुवा देखा गया के शबे मेराज की फजीलत शबे कदर से भी ज्यादा है और फिर इस रात में लोगो ने इबादत के भी खास खास तरीके मशहूर कर दिये हे के इस रात में इतनी रकाते पढी जाये और हर रकात में फला फला सुरते पढी जाये और इस तरह की और बाते इस नमाज के बारे में मशहूर हो गयी, ये सब बाते बे-असल हे, शरीअत में उनकी कोई असल और कोई बुनियाद नही हे.

अल्लाह इन बातो पर अमल की तौफीक नसीब फरमाये और बे-असल और खुराफात से बचना नसीब फरमाये आमीन.

रजब के रोजे की हकीकत

कुछ लोग २७वी रजब के रोजे को फजीलत वाला समजते हे जेसे के आशुरा १०वी मुहर्रम का रोजा और अरफा का रोजा फजीलत वाला हे, तो एक या दो जइफ रीवायते इसके बारे में हे, लेकिन सही सनद से कोई रिवायत साबित नही.

हज.उमररदी ने बिद्दत का दरवाजा बंद किया

हज.उमररदी के जमाने में कुछ लोग २७वी रजब का रोजा रखने लगे, हज.उमररदी को पता चला के २७वी रजब का खास एहतेमाम करके लोग रोजा रख रहे हे, तो उनके यहां जरा सा भी दीन से इधर उधर होना मुमकीन नही था, तो फौरन घर से नीकल गये और एक शखस को जाकर जबरदस्ती फरमाया के मेरे सामने खाना खाओ और इस बात का सबुत दो के तुम्हारा रोजा नही हे, बाकायदा एहतेमाम करके लोगो को खाना खिलाया ताके लोगो को ये खयाल न हो के आज का रोजा ज्यादा

फजीलत का हे, बल्के जेसे दुसरे दिनो में नाफ्ली रोजे रखे जा सकते हे, दोनो में कोई फरक नही, आप ने ये एहतेमाम इसलिये फरमाया तके बिद्दत का दरवाजा बंद हो जाये और दीन के अंदर अपनी तरफ से कोई कमी जयादती ना हो.

इस रात में जाग कर कौन सी बुराई करली?

कुछ लोग ये सवाल करते हे के अगर हम ने इस रात में जाग कर इबादत कर ली और दिन में रोजा रख लिया तो कौन सा गुनाह का काम कर लिया? क्या हम ने चोरी कर ली? या शराब पीली? या डाका डाला? हम ने रात में इबादत ही तो की हे और अगर दिन में रोजा रख लिया तो क्या खराबी का काम किया?

उसका जवाब दीन ‘इत्तीबाअ’ का नाम हे

हज.उमररदी ने ये बतला दिया के खराबी ये हुवी के इस दिन के अंदर रोजा रखना अल्लाह ने नही बतलाया और खुद अपनी तरफ से किसी चिझ का एहतेमाम करना और उसको जरूरी समजते हुवे अंजाम देना ही असल खराबी हे, सारे दीन का खुलासा ‘इत्तीबाअ’ हे के हमारा हुकम मानो, ना रोजा रखने में कुछ रखा हे, ना इफतार

करने में कुछ रखा हे और ना नमाज पढने में कुछ रखा हे, जब हम कहे के नमाज पढो तो नमाज पढना इबादत हे, जब हम कहे के रोजा रखो तो रोजा रखना इबादत हे और जब हम कहे के रोजा ना रखो तो रोजा ना रखना इबादत हे, अगर उस वकत रोजा रखोगे तो ये दीन के खिलाफ होगा, दीन का सारा खेल 'इत्तीबाअ' में हे अगर अल्लाह ये हकीकत दिल में उतार दे तो सारी अपने मन से घडी हुवी बिद्दतो की जड कट जाये.

वो दीन में जीयादती कर रहा हे

अब अगर कोई शखस इस रोजे का एहतेमाम कर रहा हे तो वो शखस अपनी तरफ से दीन में ज्यादती कर रहा हे और दीन को अपनी तरफ से घड रहा हे, इसलिये इस सोच से रोजा रखना जायज नही, हा अगर कोई शखस आम दिनो की तरह इस में भी रोजा रखना चाहता हे तो रख ले इसकी मुमानत नही लेकिन अगर इसकी ज्यादा फजीलत समझ कर सुन्नत समझ कर या इसको ज्यादा अजरो सवाब समझ कर इस दी रोजा रखना या इस रात में जागना दुरूस्त नही बल्के बिद्दत हे. अल्लाह हम अपने हुकमो की इत्तीबा नसीब फरमाये और

बिद्दतो से बचना नसीब फरमाये, आमीन.

शबे मेराज की तारिख कौन सी?

सबसे पेहली बात तो ये के २७वी रजब के बारे में यकीन से नही कहा जा सकता के ये वही रात हे, जिस में हुजूर ﷺ मेराज पर तशरीफ ले गये थे, क्युंके इस रात के बारे में मुखतलीफ रीवायते हे, कुछ रिवायतो से मालुम होता हे के हुजूर ﷺ रबीउल अव्वल के महीने में तशरीफ ले गये थे, कुछ रिवायतो में रजब का जीकर हे और कुछ रिवायतो में कोई और महिना बयान किया गया हे, इस लिये पूरे यकीन के साथ नही कहा जासकता के सही माने में कौन सी रात शबे मेराज थी.

अगर ये फजीलत वाली रात होती तो इसकी तारीख मेहफुज होती

अगर शबे मेराज भी शबे कदर की तरह कोई मखसुस रात होती और उसके बारे में कोई खास अहकाम होते तो इसकी भी तारीख और महिना मेहफुज रखने का एहतेमाम किया जाता, इस लिये शबे मेराज की तारीख मेहफुज नही, तो अब यकीन के साथ नही कहा सकता के २७वी रजब ही शबे मेराज हे.

यही एक रात फजीलत वाली थी

और अगर ये बात मान ली जाये के हुजूर ﷺ २७वी रजब को मेराज के लिये तशरीफ ले गये थे, जिस में ये वाकिया पेश आया था और जिस में फिर आप को अल्लाह की नजदीकी का मकाम अता फरमाया और अपनी बारगाह में हाझरी की फजीलत अता फरमायी और उम्मत को ५० नमाजो का तोहफा भेजा, तो बेशक वो फजीलत वाली रात थी, किसी मुसलमान को उसकी फजीलत में क्या शक हो सकता हे? लेकिन ये फजीलत हर आने वाले साल की २७वी रजब को हासिल नही.

दुसरी बात ये के ये मेराज का वाकिया सन ५ नबवी में पेश आय यानी के आप के नबी बन्ने के पांचवे साल ये शबे मेराज पेश आयी जिसका मतलब ये के इस वाक्ये के बाद आप १८ साल की तक दुनिया में तशरीफ फरमा रहे लेकिन इन १८ सालो में ये कही साबित नही के हुजूर ﷺ ने शबे मेराज के बारे में कोई खास हुकम दिया हो या इसके मनाने का एहतेमाम फरमाया हो या इसके बारे ये इरशाद फरमाया हो के इस रात में शबे कदर की तरह जागना ज्यादा आजरो सवाब का सबब हे ना तो

आप का कोई इरशाद हे ना आप के जमाने में इस रात को जागने का कोई एहतेमाम साबित हे ना हुजूरﷺ जागे ना सहाबारदी जागे और ना कही आप ने इसकी ताकीद फरमायी और ना सहाबारदी ने अपने तौर पर इसका कोई एहतेमाम फरमाया.

इससे जयादा बेवकूफ कोई नही

फिर हुजूरﷺ के इस दुनिया से तशरीफ ले जाने के बाद १०० साल तक सहाबारदी दुनिया में मौजुद रहे, उस पूरी सदी में कोई एक वाक्या ऐसा साबित नही के जिसमें सहाबारदी ने २७वी रजब को खास एहतेमाम कर के मनाया हो, इस लिये जो चिझ हुजूरﷺ ने नही की और जो हुजूरﷺ के सहाबारदी ने नही की उसको दीन का हिस्सा करार देना या उसको सुन्नत करार देना, या उसके साथ सुन्नत जेसा मामला करना बिदअत हे अगर कोई शखस ये कहे के में (नउजुबिल्लाह) हुजूरﷺ से ज्यादा जानता हुं के कौन सी रात ज्यादा फजीलत वाली हे या कोई यु कहे के मुझे सहाबारदी से ज्यादा ईबादत का शौक हे अगर सहाबारदी ने ये अमल नही किया तो में इसको करूंगा तो उससे बडा बेवकूफ कौन होगा?

रजब के कुंडो का हुकम

शबे मेराज की तो कुछ हकीकत भी हे, के इस रात में हुजूर ﷺ इतने आला मकाम पर तशरीफ ले गये थे, लेकिन इस से भी ज्यादा आज कल फरज और वाजिब के दरजे में माशरे में जो चिझ फेल गयी हे, वो है कुंडे, अगर किसी ने कुंडे नही किये तो वो मुसलमान ही नही, नमाज पढे या ना पढे, रोजे रखे ना रखे, गुनाहो से बचे ना बचे, लेकिन कुंडे जरूर करे, अगर कोई शखस ना करे या करने वालो को मना करे, तो उस पर लानत और मलामत की जाती हे, अल्लाह जाने ये कुंडे कहा से निकल आये? ना कुरान व हदीस से साबित हे, ना सहाबा रदी से, ना ताबीइन से, ना तबए ताबीइन से और ना बुजरूगाने दीन से, कही से इसकी कोई असल साबित नही.

कुंडो को इतना जरूरी समझा जाता हे के घर में दुसरे काम हो या ना हो लेकिन कुंडे जरूर होने चाहिये, इसकी वजह ये है के इसमें मझा और लज़्ज़त आती हे और हमारी कौम को लज़्ज़त और मझे की आदत पड गयी हे, कोई मेला होना चाहिये और कोई नफस के मझे का सामान होना चाहिये, हलवा और पूरिया पक्ती हे, इधर

से उधर और उधर से इधर आती जती हे, तो ये एक मझे का काम हे इस लिये शैतान ने इसमें मशगुल कर दिया.

ये उम्मत खुराफात में खो गयी

इस कीसम की चिझो को जरूरी समझ लिया गया और हकीकी चिझो पीठ के पीछे डाल दिया, इसके बारे में अपने भाईयो को समझाने की जरूरत हे, इस लिये बहोत से लोग नासमझी की वजह से ये काम करते हे, उनके दिलो में कोई दुश्मनी नही होती, लेकिन दीन को नही जानते, उन बेचारो को इसके बारे में पता नही हे, वो समजते हे के जिस तरह इदुल अजहा के मोके पर कुरबानी होती हे और गोश्त इधर से उधर और उधर से इधर आता जता हे, ये भी कुरबानी की तरह कोई जरूरी चिझ होगी और कुरान व हदीस में कोई सबुत होगा, इस लिये ऐसे लोगो को प्यार मोहब्बत और शफकत से समझाया जाये और ऐसी मेहफिलो में शरीक होने से बचा जाये.

मज़मून का खुलासा

रजब का महिना रमजान का मुकाद्दमा हे इस लिये रमजान के लिये पेहले से अपने आप को तय्यार करने

की जरूरत हे, इस लिये हुजूरﷺ दो महीने पेहले से दुआ भी फरमा रहे है,

‘अलल्लाहुम्म बारिक लना फी रजब व शअबान व बल्लीगना रमजान’

तरजुमा: “ए अल्लाह हमारे लिये रजब और शअबान के महीने में बरकत अता फरमाये और हमे रमजान तक पोहचा दीज्ये”.

और लोगो को तवज्जूह दिला रहे हे, के अब इस मुबारक महीने के लिये अपने आप को तय्यार कर लो और अपना टाईम ऐसा बनाने की फिकर करो के जब ये मुबारक महिना आये तो इसका ज्यादा से ज्यादा वक्त अल्लाह की ईबादत में गुजरे.

अल्लाह अपने रहमत से इसकी समझ अता फरमाये और सही तौर पर अमल करने की तौफीक अता फरमाये आमीन.